P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के अनुशासन एवं मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

हरे कृष्ण
प्रवक्ता,
शिक्षा संकाय, बिल्थरा रोड,
बलिया (उ0 प्र0).

श्रवण कुमार शास्त्री
अध्यापक,
बेसिक शिक्षा परिषद,
फतेहपुर (उ0 प्र0)

सारांश

माध्यमिक विद्यालय बालक के जीवन का जीवनवृत्तिक स्तम्भ एवं विशेष क्षेत्र में कार्य – कुशलता के निर्माण का द्योतक हैं। शिक्षक अच्छा है या बुरा, इसका उसके शिष्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अपना प्रभाव जितना अच्छा एक एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक डाल सकता है तुलना में अप्रशिक्षित शिक्षक नही, क्योंकि इन्हे व्यवस्था, नियम, कर्तव्यनिष्ठा, शिक्षाभ्यास, नियमन समय, अनुशासन एवं मानवाधिकारों की समझ से सम्बन्धित कठिन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिससे ये 'एकता व अनुशासन' में रह कर इसे क्रियान्वित करा सकें। प्रस्तुत अध्ययन में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों में अनुशासन एवं मानवाधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अधिक सकारात्मक पाया जाना इसका सूचक है।

मुख्य शब्द : नागरिकता, भारतीय संविधान, राष्ट्रीयता, अनुशासन

प्रस्तावना

शिक्षा प्रत्येक सभ्य समाज, विकसित राज्य या राष्ट्र की सुदृढ़ एवं द आधारभूत शिला होती है। शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग होते हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यचर्या। जब तीनो कारकों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की जाती है तो शिक्षण – प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। इस शिक्षण प्रक्रिया को सम्पादित करने में शिक्षकों की अहम् भूमिका होती है। इसीलिए कहा भी गया है कि– If you run, student will walk; If you walk, they will stand; If you stand, they will sit; If you lie, they they will die.

शिक्षक में प्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ – साथ मानवाधिकार, अनुशासन, सहानुभूति, मैत्री, करूणा, दया, सच्चाई, न्यायप्रियता और निष्कपटता, आत्मनिर्भरता, साहस और निर्भीकता, नेतृत्व क्षमता, समभाव, स्वस्थ्य नागरिकता और राष्ट्रीयता की भावना, अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना आदि चारित्रिक गुणों का भी विशेष महत्व है। इस प्रकार हम कह सकते कि शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली सन्ततियों पर अपना प्रभाव डालता है। अनुशासन के अभाव में शिक्षक में उपर्युक्त गुण विकसित नही हो सकते। इसीलिए कहा भी गया है कि हम अनुशासित रहेगें तो मेरा परिवार अनुशासित होगा, मेरा परिवार अनुशासित रहेगा तो मेरा समाज अनुशासित होगा, मेरा समाज अनुशासित रहेगा तो गाँव अनुशासित होगा, गाँव अनुशासित रहेगें तो राज्य अनुशासित होगा, राज्य अनुशासित रहेगा तो राष्ट्र अनुशासित होगा, राष्ट्र अनुशासित रहेगें तो अनुकरणीय रूप में पूरा विश्व अनुशासित होगा। अनुशासन के साथ– साथ मानवाधिकार भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारतीय संविधान में प्रदत्त मानवाधिकार जो अनुच्छेद 15 धर्ममूल, वंश, जाति, लिंग, अनुच्छेद 16 में अवसर की समानता, अनुच्छेद 17, 18,19, 20, 21, 22, 23, 24 में शोषण के विरूद्ध अधिकार व अनुच्छेद 32– 35 में संवैधानिक उपचारों का अधिकार निहित है जिससे मानवाधिकारों के हनन को रोका जा सके परन्तु जानकारी एवं चेतना के अभाव में मानवता को त्याग कर बालश्रम, बंधुआ मजदूरी, कमजोरों पर अत्याचार, स्त्री/पुरूष में भेद,शिक्षा/अधिकार में भेद–भाव, बाल– विवाह, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या के साथ– साथ बढ़ती हुई अराजक्ता, आतंकवाद, जातिवाद, भाषावाद, अलगाववाद एवं नक्सलवाद के रूप में व्यापक पैमाने पर मानव– अधिकारों का हनन हो रहा है। इन उपर्युक्त कारकों ने वर्तमान शीर्षक पर अध्ययन हेतु प्रेरित किया कि एन0सी0सी0 एक अनुशासित कोर है इसीलिए शिक्षा की धुरी, शिक्षकों में अनुशासन एवं मानवाधिकारें के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जाये।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

माध्यमिक विद्यालय जीवन– वृत्तिक तथा राष्ट्र निर्माण की सेवाओं को आधार प्रदान करता है। यहीं से विद्यार्थी अपने जीवन के निश्चित क्षेत्र में कैरियर का निर्माण करना आरम्भ करता है।

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण

माध्यमिक विद्यालय

शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश के अनुसार, माध्यमिक शिक्षा 10़2 की शिक्षा प्रणाली का एक स्तर है, जिसमें हाईस्कूल एवं इण्टमीडिएट की शिक्षा आती है। इस स्तर की शिक्षा से विद्यार्थियों को जहां एक ओर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार किया जाता है, वही दूसरी ओर उन्हे कार्य की दुनिया में प्रवेश दिलाने के योग्य बनाया जाता है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन0सी0सी0)

1948 ई0 में संसद द्वारा पारित 'राष्ट्रीय कैडेट कोर अधिनियम' के तहत स्कूल/कालेज/विश्वविद्यालयों में इसकी स्थापना हुई। इसके अन्तर्गत युवकों में चरित्र , साहस, मैत्री, नेतृत्व, धर्म निरपेक्षता का दृष्टिकोण, साहस और क्रीड़ा के प्रति उत्साह तथा निःस्वार्थ सेवा का आदर्श जैसे गुणों का विकास करना ताकि वह भारत जैसे विशाल राष्ट्र का कल्याण करने वाला और देशभक्त नागरिक बने।

अनुशासन

अनुशासन किसी प्रकार का बाहरी बंधन नही है अपितु व्यक्ति की एक प्रकार की आदत है जो वातावरण तथा सामाजिक नियमों के अनुसार रूप धारण करती है। नियंत्रण में रहकर नियमानुसार कार्य करने की आदत डालना ही अनुशासन कहलाता है। एस0 पोरवाल (1987) के अनुसार ''क्रमवार प्रशिक्षण, व्यायाम, मानसिक विकास, समझ, नैतिक एवं शारीरिक कृतियों के नियंत्रित विकास को ही अनुशासन कहते हैं।''

मानवाधिकार

मानवाधिकार शब्द 'मानव' एवं 'अधिकार' दो शब्दों के योग से बना है जिसका अर्थ 'मानव के अधिकार' से ही होता है, इसमें मानव के नैसर्गिक अधिकारों– जीने, स्वतंत्रता व दैहिक सुरक्षा, दासता या गुलामी से मुक्ति, यंत्रणा, क्रूर या अमानवीय व्यवहार से मुक्ति, समता, संरक्षण व संचरण, अधिकार वंचना का उपचार, कुटुम्ब व व्यापार की स्वतंत्रता, सम्पत्ति के स्वामित्व, राष्ट्रीयता, अभिव्यक्ति, स्वामित्व इत्यादि का अधिकार से है। ये एक व्यक्ति की परिपूर्णता, स्वतंत्रता व सम्यक् विकास के लिए अपरिहार्य माने गये है। अतः इन्हें मानवाधिकार की संज्ञा दी गयी है। आचार्य विनोबा भावे के अनुसार 'सर्वभूतहितेरताः।'

अभिवृत्ति

यह एक मानसिक दशा है जो सामाजिक व्यवहार की अभिव्यक्ति में विशेष भूमिका प्रस्तुत करती है। यह पूर्ण समायोजन के पहले की तथा उसे प्रकट करने वाली स्थिति होती है जो सम्भावित व्यवहार को व्यक्त करता है। रेमर्स रूमेल एवं गेज (1983) के शब्दों में ''अभिवृत्ति अनुभवों के द्वारा व्यवस्थित वह संवेगात्मक प्रवृत्ति है जो किसी मनोवैज्ञानिक पदार्थ या वस्तु के प्रति प्रतिक्रिया करती है।''

उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षकों के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षकों के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षकों के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
5. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षकों के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

परिसीमायें

प्रस्तुत अध्ययन में समय– सीमा एवं संसाधनों की कमी के कारण सभी माध्यमिक विद्यालयों के एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक तथा शिक्षिकाओं को नही लिया जा सकता है। अतः अध्ययन हेतु इलाहाबाद मण्डल तथा कानपुर मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को चुना गया है।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में इलाहाबाद एवं कानपुर मण्डल के माध्यमिक विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है तथा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों एवं उससे सम्बन्धित 300 प्रशिक्षित तथा 300 अप्रशिक्षित

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन 'यादृच्छिक विधि' द्वारा किया गया है।

उपकरण

अनुशासन से सम्बन्धित प्रश्नावली के प्रथम प्रारूप में 75 एवं मानवाधिकार से सम्बन्धित प्रश्नावली के प्रथम प्रारूप में 60 कथनों को रखा गया है। वैधता की जाँच के लिए (Tyr- Out and validation)विषय– विशेषज्ञों के द्वारा जाँच के पश्चात 65 व 50 प्रश्नों को अन्तिम रूप से सम्मिलित किया गया।

परीक्षणों के प्रत्येक पद की विश्वसनीयता हेतु परीक्षण– पुनर्परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। दोनों प्राप्ताकों का सहसम्बन्ध गुणांक ;तद्ध जो कि विश्वसनीयता गुणांक होता है का मान .98 प्राप्त हुआ जो कि अत्यन्त उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता है। शिक्षक– शिक्षिकाओं की विश्वसनीयता गुणांक .97 प्राप्त हुआ जो पीयरसन की प्रोडक्ट मुमैन्ट विधि की सहसम्बन्ध सारिणी के अनुसार उच्च स्तर का है। अनुशासन अभिवृत्ति प्रश्नावली में 45 सकारात्मक तथा 20 नकारात्मक एवं मानवाधिकार अभिवृत्ति प्रश्नावली में 38 सकारात्मक तथा 12 नकारात्मक सम्बन्धी प्रश्न है। ये प्रश्न लिकर्ट के पाँच बिन्दु मापनी पर आधारित है। अत्यधिक सहमत (5), सहमत (4), तटस्थ (3), असहमत (2) एवं अत्यधिक असहमत (1) सम्बन्धी धनात्मक प्रश्नों को अंक प्रदान किए गये हैं। नकारात्मक प्रश्नों को इसके विपरीत अंक प्रदान किए गये हैं।

सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन, टी– परीक्षण आदि सांख्यिकीय सूत्रों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति के उद्देश्यों के पश्चात् परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु निम्न तालिकोओं का निर्माण किया गया है–

तालिका संख्या 01

अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति

	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतंत्रता स्तर (d.f.)	'टी' मान	सार्थकता
H1शिक्षक छत्र 300	257.26	15.83	598	.173	असार्थक
शिक्षिकायें छत्र 300	257.47	14.30			
H2एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक छत्र 150	255.62	17.14	298	2.814	< 0.01 सार्थक
एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें छत्र 150	260.54	18.83			
H3एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक छत्र 150	255.62	17.14	298	1.797	असार्थक
एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षक छत्र 150	258.80	14.27			

< .05 = 1.96, < .01 = 2.58

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रथम परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।'' को स्वीकृत किया जाता है क्योंकि माध्यमिक शिक्षक एवं शिक्षिकायें अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही रखते हैं।

द्वितीय परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रतिअभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।''को अस्वीकृत किया जाता है क्योंकि सार्थकता के < .01 स्तर पर अन्तर प्रदर्शित करते हैं।

तृतीय परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षकों के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।'' को भी स्वीकृत किया जाता है क्योंकि < .05 ,oa < .01 सार्थकता स्तर से टी का मान बहुत कम है जो दोनों समूहों में अन्तर प्रदर्शित नही होता है।

वर्तमान अध्ययन में ही माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों/शिक्षिकाओं के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति के उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में निर्मित परिकल्पनाओं का परीक्षण अधोरचित तालिका में प्रस्तुत कर व्याख्या किया गया है–

तालिका संख्या 02

अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति

	मध्यमान(Mean)	मानक विचलन(S.D.)	स्वतंत्रता स्तर(d.f.)	'टी' मान	सार्थकता
H4शिक्षक छत्र 300	195.96	13.20	598	.543	असार्थक
शिक्षिकायें छत्र 300	195.39	12.64			
H5एन0सी0सी0प्रशिक्षित	197.61	13.46			

शिक्षक छत्र 150					
एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें छत्र 150	195.21	13.59	298	1.532	असार्थक
H6एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक छत्र 150	197.61	13.46			
एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षक छत्र 150	194.32	12.77	298	2.170	< .05 सार्थक

< .05 = 1.96 , < .01 = 2.58

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि चतुर्थ परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है''को स्वीकृत किया जाता है क्योंकि शिक्षक एवं शिक्षिकायें मानवाधिकारों कं प्रति लगभग समान अभिवृत्ति प्रदर्शित किए हैं।

पंचम परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है''को स्वीकृत किया जाता है। ये दानों समूह मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में लगभग समानता प्रदर्शित किए हैं।

पष्ठ परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षकों के मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है'' को अस्वीकृत किया जाता है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक समूह <.05 सार्थकता स्तर पर मानवाधिकार के प्रति अभिवृत्ति में पर्याप्त अन्तर रखते हैं।

सारांश उपयोगिता

माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत एन0सी0सी0 अप्रशिक्षित शिक्षक, शिक्षिकाओं की अपेक्षाय एन0सी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति कुछ अधिक सकारात्मक है। एन0सी0सी0 प्रशिक्षित एवं शिक्षिकाओं का अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति उच्च होने का कारण एन0सी0सी0 प्रशिक्षण के नियम एवं मर्यादाओं के दृष्टिगत कार्य करने की आदतों का परिणाम हो सकता है जो व्यक्ति को प्रतिबद्ध बनाता है। मानवाधिकारों के प्रति अभिवृत्ति भी अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में प्रशिक्षित शिक्षकों में अधिक पाया जाना इस बात का सूचक है कि वे अनुशासित रहने के साथ– साथ अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक रह मानवाधिकारों के प्रति भी सजगता का सूचक है।

इस अध्ययन से सभी स्तर के विद्यार्थियों को एन0सी0सी0 का प्रशिक्षण देने के साथ– साथ सभी शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को भी इस पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है जिससे एक अनुशासित एवं अधिकारों के प्रति जागरूक पीढ़ी तैयार कर मानवाधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Porwal, S. (1987) Disciplined Versus Indisciplined Students their Personality and metal abilities. Ph.D. Thisis, Education dept. Kumau University.
2. National Human Rights Commission (2007): Module on NHRC, New Delhi.
3. Raghuram, R.K., Educational Development, CRESCENT Publication Corporaton, New Delhi, 2008, P. 186- 189.
4. Rathore, H.C.S. and Gardia Alok, Preparing teaching for education of democratic citizenship, Anweshika, Indian Journal of teacher education, Vol. 3, No. 2, Dec. 2006, P. 19-32.
5. Singh, A.K. (2013) Research Methods in Psychology, Sociology and Education, Motilal Banarasidas, 41, U.A. Banglo Road, Jawahar Nagar- Delhi.
6. Surendra Mohan (2007) Human Rights in the time of Patriatism, Mainstream, Vol. XLV, No. 34.
7. Mathew, A.F. (2003) Human Rights and question of Art Presented at the south asia workshop on Human rights, SAFHR, Kathmandu, Nepal, July 26- August 4.
8. Cheng, Y.C. (1996) Relating between teachers professionalism and job attitudes educational out come and organizational Factors, Journal of educational research, 89(3), 169- 171.
1. विनोबा भावे, विनोबा साहित्य 16, तीसरी शक्ति परंधाम. प्रकाशन पवनार वर्धा, लक्ष्मीनारायण देवस्थान, वर्धा, 1996.
2. दोसी प्रवीण, 'शिक्षा संकाय में शोध अध्ययन पर प्रकाश व गुणवत्ता का रास्ता' भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली जनवरी 2005, पृ. 45– 48.